# हमेशा सोच समझ कर काम करो

दक्षिण प्रदेश के एक प्रसिद्ध नगर पाटलीपुत्र मे मणिभद्र नाम का एक धनिक महाजन रहता था। लोक-सेवा और धर्मकार्यो मे रत रहने से उसके धन-संचय मे कुछ कमी आ गई, समाज मे मान घट गया। इससे मणिभद्र को बहुत दुःख हुआ। दिन-रात चिन्तातुर रहने लगा। यह चिन्ता निष्कारण नही थी। धनहीन मनुष्य के गुणों का भी समाज मे आदर नही होता।

उसके शील-कुल-स्वभाव की श्रेष्ठता भी दरिद्रता मे दब जाती है। बुद्धि, ज्ञान और प्रतिभा के सब गुण निर्धनता के तुषार मे कुम्हला जाते है। जैसे पतझड के झंझावात मे मौलसरी के फूल झड जाते है, उसी तरह घर-परिवार के पोषण की चिन्ता मे उसकी बुद्धि कुन्द हो जाती है। घर की घी-तेल-नमक-चावल की निरन्तर चिन्ता प्रखर प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति की प्रतिभा को भी खा जाती है। धनहीन घर श्मसान का रुप धारण कर लेता है। प्रियदर्शना पत्नी का सौन्दर्य भी रुखा और निर्जीव प्रतीत होने लगता है। जलाशय मे उठते बुलबुलो की तरह उनकी मानमर्यादा समाज मे नष्ट हो जाती है।

निर्धनता की इन भयानक कल्पनाओ से मणिभद्र का दिल कांप उठा। उसने सोचा, इस अपमानपूर्ण जीवन से मृत्यु अच्छी है। इन्ही विचारो मे डूबा हुआ था कि उसे नींद आ गई। नींद मे उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न मे पद्मनिधि ने एक भिक्षु की वेषभूषा में उसे दर्शन दिये, और कहा "कि वैराग्य छोड दे। तेरे पूर्वजो ने मेरा भरपूर आदर किया था। इसीलिये तेरे घर आया हूँ। कल सुबह फिर इसी वेष में तेरे पास आऊँगा। उस समय तू मुझे लाठी की चोट से मार डालना। तब मै मरकर स्वर्णमय हो जाउँगा। वह स्वर्ण तेरी गरीबी को हमेशा के लिए मिटा देगा।"

सुबह उठने पर मणिभद्र इस स्वप्न की सार्थकता के संबन्ध मे ही सोचता रहा। उसके मन मे विचित्र शंकाये उठने लगी। न जाने यह स्वप्न सत्य था या असत्य,

यह संभव है या असंभव, इन्ही विचारो मे उसका मन डांवाडोल हो रहा था। हर समय धन की चिन्ता के कारण ही शायद उसे धनसंचय का स्वप्न आया था। उसे किसी के मुख से सुनी हुई यह बात याद आ गई कि रोगग्रस्त, शोकातुर, चिन्ताशील और कामार्त्त मनुष्य के स्वप्न निरथक होते है। उनकी सार्थकता के लिए आशावादी होना अपने को धोखा देना है।

मणिभद्र यह सोच ही रहा था कि स्वप्न मे देखे हुए भिक्षु के समान ही एक भिक्षु अचानक वहां आ गया। उसे देखकर मणिभद्र का चेहरा खिल गया, सपने की बात याद आ गई। उसने पास मे पडी लाठी उठाई और भिक्षु के सिर पर मार दी। भिक्षु उसी क्षण मर गया  भूमि पर गिरने के साथ ही उसका सारा शरीर स्वर्णमय हो गया। मणिभद्र ने उसका स्वर्णमय मृतदेह छिपा लिया।

किन्तु, उसी समय एक नाई वहां आ गया था। उसने यह सब देख लिया था। मणिभद्र ने उसे पर्याप्त धन-वस्त्र आदि का लोभ देकर इस घटना को गुप्त रखने का आग्रह किया। नाई ने वह बात किसी और से तो नही कही, किन्तु धन कमाने की इस सरल रीति का स्वयं प्रयोग करने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा यदि एक भिक्षु लाठी से चोट खाकर स्वर्णमय हो सकता है तो दूसरा क्यो नही हो सकता। मन ही मन ठान ली कि वह भी कल सुबह कई भिक्षुओ को स्वर्णमय बनाकर एक ही दिन मे मणिभद्र की तरह श्रीसंपन्न हो जाएगा। इसी आशा से वह रात भर सुबह होने की प्रतीक्षा करता रहा, एक पल भी नींद नही ली।

सुबह उठकर वह भिक्षुओ की खोज मे निकला। पास ही एक भिक्षुओ का मन्दिर था। मन्दिर की तीन परिक्रमाये करने और अपनी मनोरथसिद्धि के लिये भगवान बुद्ध से वरदान मांगने के बाद वह मन्दिर के प्रधान भिक्षु के पास गया, उसके चरणो का स्पर्श किया और उचित वन्दना के बाद यह विनम्र निवेदन किया कि- "आज की भिक्षा के लिये आप समस्त भिक्षुओ समेत मेरे द्वार पर पधारे।"

प्रधान भिक्षु ने नाई से कहा- "तुम शायद हमारी भिक्षा के नियमो से परिचित नही हो। हम उन ब्राह्मणो के समान नही है जो भोजन का निमन्त्रण पाकर गृहस्थो के घर जाते है। हम भिक्षु है, जो यथेच्छा से घूमते-घूमते किसी भी भक्तश्रावक के घर चले जाते है और वहां उतना ही भोजन करते है जितना प्राण धारण करने मात्र के लिये पर्याप्त हो। अतः, हमे निमन्त्रण न दो। अपने घर जाओ, हम किसी भी दिन तुम्हारे द्वार पर अचानक आ जायेगे।"

नाई को प्रधान भिक्षु की बात से कुछ निराशा हुई, किन्तु उसने नई युक्ति से काम लिया। वह बोला- "मैं आपके नियमो से परिचित हूं, किन्तु मैं आपको भिक्षा के लिये नही बुला रहा। मेरा उद्देश्य तो आपको पुस्तक-लेखन की सामग्री देना है। इस महान् कार्य की सिद्धि आपके आये बिना नही होगी।" प्रधान भिक्षु नाई की बात मान गया। नाई ने जल्दी से घर की राह ली वहां जाकर उसने लाठियां तैयार कर ली, और उन्हे दरवाजे के पास रख दिया। तैयारी पूरी हो जाने पर वह फिर भिक्षुओ के पास गया और उन्हे अपने घर की ओर ले चला। भिक्षु-वर्ग भी धन-वस्त्र के लालच से उसके पीछे-पीछे चलने लगा। भिक्षुओ के मन मे भी तृष्णा का निवास रहता ही है। जगत् के सब प्रलोभन छोडने के बाद भी तृष्णा संपूर्ण रुप से नष्ट नही होती। उनके देह के अंगो मे जीर्णता आ जाती है, बाल रुखे हो जाते है, दांत टूट कर गिर जाते है, आंख-कान बूढे हो जाते है, केवल मन की तृष्णा ही है जो अन्तिम श्वास तक जवान रहती है।

उनकी तृष्णा ने ही उन्हे ठग लिया। नाई ने उन्हे घर के अन्दर लेजाकर लाठियो से मारना शुरु कर दिया। उनमे से कुछ तो वही धराशायी हो गये, और कुछ का सिर फूट गया। उनका कोलाहल सुनकर लोग एकत्र हो गये। नगर के द्वारपाल भी वहाँ आ पहुँचे। वहाँ आकर उन्होने देखा कि अनेक भिक्षुओ का मृतदेह पडा है, और अनेक भिक्षु आहत होकर प्राण-रक्षा के लिये इधर-उधर दौड रहे है।

नाई से जब इस रक्तपात का कारण पूछा गया तो उसने मणिभद्र के घर मे आहत भिक्षु के स्वर्णमय हो जाने की बात बतलाते हुए कहा कि वह भी शीघ्र स्वर्ण संचय करना चाहता था। नाई के मुख से यह बात सुनने के बाद राज्य के अधिकारियों ने मणिभद्र को बुलाया और पूछा कि- "क्या तुमने किसी भिक्षु की हत्या की है?"

मणिभद्र ने अपने स्वप्न की कहानी आरंभ से लेकर अन्त तक सुना दी। राज्य के धर्माधिकारियो ने उस नाई को मृत्युदण्ड की आज्ञा दी, और कहा---ऐसे 'कुपरीक्षितकारी'- बिना सोचे काम करने वाले के लिये यही दण्ड उचित था। मनुष्य को उचित है कि वह अच्छी तरह देखे, जाने, सुने और उचित परीक्षा किये बिना कोई भी कार्य न करे। अन्यथा उसका वही परिणाम होता है जो इस कहानी के नाई का हुआ।

सीख: अच्छी तरह देखे, जाने, सुने और उचित परीक्षा किये बिना कोई भी कार्य न करो।

## हमसे मटो मभार कर काम कर ँ

म्रिल्ल पहमे क िक प्रसिम्नगर पाटलीपह्र म मेल्लिहम् नाम का िक रानिक महाजन रहता था। लके-मके छोर रगक्लाट्ट मे रेड रहन मे उमक रन-मंरय म हेक कभी मु गएँ, ममाज म मान भए गया। उमम मेल्लिहम् क गहड्ड म्हाप हम्म। रिन-रात रिन्हुड्ड रहन लगा। यह रिन्हु निष्कारल्ल नहीं थी। रानहीन मनुष्क गल्ल का ही ममाज म मुम्मर नहीं हुए।

उमक मील-हलु-मक्कार की मप्रेड्ड ही म्रिम्ड्ड म म्रिग एडी हा गेम्प्रि्हन छोर प्रतिठा क मेग गल्ल निहनड्ड क उधार म हेमुल्ला एड्ड हा एमें पेडाप्र क रिगावड म मेलमरी क रेल्र प्र एड्ड हे, उमी डरह भर-परिवार क पेथेल्ल की रिन्हु म उमकी मम्प्रि्हड्ड्ह एडी हा भिर की भी-डल-नमक-रावल की निरन्र रिन्हु प्रपर प्रतिठा-मपन्नबुिर्की प्रतिठा क ही रिपा एडी हा रानहीन भर मम्पान का हप रारल्ल कर लड्ड हा प्रियम्हना पडानी का मे नहू ही गपा छोर निल्लीव प्रडीड हने लगड्ड हा एलामय म उठड गेलगल की डरह उनकी मानमट्टाम ममाज म नेपस्र एडी हा

निहनड्ड की उन हयानक कलत्राड म मेल्लिहम् का मिल कांप उठा। उमन मेटा, उम मुपमानपहू ल्लीवन म मेड्ड मुम्ही हा उन्हीं विरात्र मे रेडा हम्म था कि उम नींम मु गएँ। नींम म उमन िक मप्र म्पिा। मप्र म पम्मिनि रि न िक रिब्र की बपरुधा म उम म्रिन मिय, छोर कहा "कि वरोगक्र रे मा डरा पेद्रल ने मेरा हापम मुम्र किया था। उमीलिय डरा भर मुखा हा किल मड्ड ह फिर उमी बप म डरा पाम मुडुगा। उम ममय डुमुप्र लाठी की रिटे म मार हालना। डरा म मर कर मक्कमय ह एडुगा। वह मक्क डरी गरीरी क हेमसे क लिए भिए मगा।"

मड्ड ह उठन पर मेल्लिहम् उम मप्र की माट्रकडा क मेरान्म हो मटोड्ड रहा। उमक मन म विरिड् मंकाय उठन लगी। न रहन यह मप्र मड्ड था या मुमड्ड, यह मंहव ह था मुमंहव, उन्हीं विरात्र म उमका मन हावाहले ह रहा था। हर ममय रान की रिन्हु क कारल्ल ही मायम उम रानमंरय का मप्र मुया था। उम किमी क माप म मेजी हएँ यह राड याम मु गएँ कि रगेगम्ब्र मकेड्ड, रिन्हुमील छोर कामाड्रमनुष्क मप्र निरथक हड्ड हा उनकी माट्रकडा क लिए मुमायाम्मी हन मपन के रिपा मटा हा

मेल्लिहम् यह मटो ही रहा था कि मप्र म रिपे हुए रिब्र क मेमान ही िक रिब्र मुरानक वहा मु गया। उम रिपिकर मेल्लिहम् का रहरा गिपल गया, मपन की राड याम मु गएँ। उमन पाम म पड़ी लाठी उठाएँ छोर रिब्र क मिर पर मार मी। रिब्र उमी भ्ल्ल मर गया हिम पर गिरन के माथ ही उमका मारा मरीर मक्कमय ह गया। मेल्लिहम् न उमका मक्कमय मरीर हिपा लिया।

किन्ड उमी ममय िक नाएँ वहा मु गया था। उमन यह मब म्पि लिया था। मेल्लिहम् न उमे पट्टाप्रान-वमुप्रि का लहे मकेर उम भटना क गेपुरापन का मुगह किया। नाएँ न वह राड किमी छोर म डे नेहीं कही, किन्ड रान कमान की उम मरल रीडि का मदवं प्रयगे करन का निमा रय कर लिया। उमन मेटा यमि िक रिब्र लाठी म रिटे पाकर मक्कमय ह मेकडा ह डे मुमरा ह नेहीं ह मेकडा। मन ही मन उन ली कि वह ही कल मड्ड ह काएँ रिब्र क मेक्कमय गना कर िक ही रिन म मेल्लिहम् की डरह मीमंपन्न ह एगा। उमी मुमा म वह राड हर मड्ड ह हने की प्रडीक्ष करड्ड रहा, िक पल ही नींम नहीं ली।

मठृप ७०कर वप हिब्द्ध की एपिे में निकला। पाम पी एक हिब्द्ध का मनिुृ था। मनिुृ की ठीन परिक्रमा व केरन ओर श्पनी मनरोंथमिम्ि्क लिय ेगवान ठम्ुम वेरम्न भागन केराम्ट वप मनिुृ क पेण्न हिब्र्क पाम गया, ठमक ्रणाम्ं केा मन्नु किया ओर ठचिठ वन्त्ु करके वप विनम्र निवमेन किया कि- "मुझ की हिब्रा क लिय मुप ममम्ठ हिब्द्ध ममठ मरा म्ख्न पर पण्रा।"

प्ण्न हिब्र्न नारं म केहा- "ठुम मायम्ट पमारी हिब्रा क नियम में परिचिठ नपी पा ेहम ठन ठ्प्युं के मेमान नपी प ेए ेंहैन का निमन्तुं पाकर ठठ्म्क ेंघर एठ ेप ेहम हिब्र्प, ए े वथम्ठ्र म घ्मठ-घ्मठ किमी ही ठरमुावक क घर चल एठ प ेओर वपां ठठना पी ठपैन करठ प े एठना प्ूर्ण प्राप्त करन माठ्र क लिय पेट्पुती मेठ:, पम निमन्तु न हाु श्पन घर एाठ, पम किमी ही मिन ठुम्पार म्ख्न पर श्रायमक मु एवगा।"

नारं क पेण्न हिब्र्की ठाठ म केकु निरामा पुरं, किन्ठुमन नेरं वय्ि्म केम लिया। वप ठलेा- "म मुपक नियम में परिचिठ पुं किन्ठुम मुपक हिब्रा क लिय नेपी ठला रपा। मरा ठम्मुठ मुपक पुम्कू-लपिन की मामगी मेरा पाेम मपाना काट की मिम्ि्मुपक मुव गिना नपी पगी।" प्ण्न हिब्र्नारं की ठाठ मान गया। नारं न एलनु्ठ मघर की राप ली वपां एकर ठमन लाणियां ठवेार कर ली, ओर ठन्क्ुरवाए के पाम राप मिया। ठवेारी पूरी प ेनेप वप पिर हिब्द्ध क पाम गया ओर ठन्मुपन घर की ओर ल चला। हिब्र्वज ही पन-वम्ठ्क लालच म ठमक पीछ-पीछ चलन लगा। हिब्द्ध क मन मकी ठुम्पुका निवाम रपठा पी पा एगठा क मेठ पलहेन छेन के ठाम ही ठुम्पुमंपक्र रूप म नेप्ठपी पठी। ठनक मेहि क मंगे मे ोीकूठा मु एठी प, गेल राप प े एठ प ेमेठं एट कर गिर एठ प ेमुंप-कान ठमृ प एेठ प ेकेवल मन की ठुम्पुपी प ए ेमेनिुम मावाम ठक एवान रपठी प

ठनकी ठुम्पुन पी ठन्पगि लिया। नारं न ठन्पुर क म्नुु लएकर लाणिय मे मारना मठु कर मिया। ठनम में केकु ठ वेपी पराममायी प ेगेव, ओर रूकु का मिर पट गया। ठनका केलापल मनुकर लगे एकठ्र प ेगेव। नगर क म्खन्पाल ही वपां मु पपुरां। वपां मुकर ठन्मुं मेपा कि मनके हिब्द्ध का मठुम्हि पठा प, ओर मनके हिब्र्मुपठ पकेर प्ूर्ण-रपा क लिय ठपर-ठपर मेप रप ह

नारं म एठ ठम रूकुठ का कारण पूछा गया ठ ठमन मपिम्ट्र क घर म मुपठ हिब्र्क मेरूमय प एेन की ठाठ ठठलाठ पुए कपा कि वप ही मीम्म्रू माग्रय करना चापठा था। नारं क मुप म वप ठाठ मनुन के ठाम राए्क मेिकारिय न मपिम्ट्र क ठेलाया ओर पूछा कि- "रूट ठमन किमी हिब्र्की पठ्ट की प?"
मपिम्ट्र न श्पन मे्यु्की कपानी मुरं म लकेर मनठक मनु मी। राए्क पम्मुिकारिय न ठम नारं क मेठुहृ्र्णकी मुझ मी, ओर कपा---एम 'रूपुरीबिठकारी'- गिना माचे केम करन वाल क लिय येपी मण्ठचिठ था। मनप्ु्क ेठचिठ प ैकि वप श्पन्मुठरप मेपि, एन, मन ओर ठचिठ परीक्षा किय गिना कारं ही काट न करा श्नमृा ठमका वपी परिण्म पठे प ए ेम कपानी क नारं का पुम्ु।

मीप: श्पन्मुठरप मेपि, एन, मन ओर ठचिठ परीक्षा किय गिना कारं ही काट न करा

श्नवाम्ट - विम्ट केल एला